प्रातः क्लास 9-11-68 ओमशान्ति पिताश्री शिव बाबा याद है?

ओमशान्ति। रूहानी बाप रूहानी बच्चों से पूछते हैं अपने को रूह या आत्मा समझ बैठे हो? क्योंकि बाप जानते हैं यह कुछ कठिन है। इसमें ही मेहनत है। जो आत्माभिमानी होकर बैठे हैं उनको ही महावीर कहा जाता है। अपने को आत्मा समझ बाप को याद करना उनको ही महावीर कहा जाता है। हमेशा अपने से पूछते रहो हम आत्म-अभिमानी है। याद से ही महावीर बनते हो। गोया सुप्रीम बनते हो। और जो भी धर्म वाले आते हैं वह इतने सुप्रीम नहीं बनते हैं। वह तो आते भी देरी से हैं। तुम सम्बन्धार सुप्रीम बनते हो। सुप्रीम अर्थात शक्तिवान। वा महावीर। अन्दर में यह खुशी होती है हम आत्मा हैं, हम सभी आत्माओं का बाप हमको पढ़ाते हैं। यह भी बाप जानते हैं कोई अपना चार्ट 25% दिखाते हैं, कोई 10% दिखाते हैं। कोई कहते हैं 24घंटे में आधा घंटा याद ठहरती है तो कितना परसेन्ट हुआ। अपनी बड़ी सम्भाल रखनी है। धीरे2 महावीर बनना है। फट से नहीं बन सकते। मेहनत है। वह जो ब्रह्मज्ञानी, तत्वज्ञानी हैं, ऐसे मत समझो वह अपने को कोई आत्मा समझते हैं। वह तो अपने को परमात्मा समझते हैं। बाकी योग किसके साथ लगाते हैं? घर से थोड़ेही योग लगाया जाता है। अभी तुम बच्चे अपने को आत्मा समझते हो। यह अपना चार्ट देखना है 24घंटे में हम कितना समय अपने को आत्मा समझते हैं। अभी तुम बच्चे जानते हो हम ईश्वरीय सर्विस पर हैं। आन गाडली सर्विस यही सभी को बताना है। बाप सिर्फ कहते हैं मन्मनाभव। अर्थात अपने को आत्मा समझ मुझे याद करो। यह है तुम्हारी सर्विस। जितनी सर्विस करेंगे तो उतना फल भी मिलेगा। यह बात अच्छी रीति समझने की है। अच्छे2 महारथी बच्चे भी इस बात को पूरा समझते नहीं है। देही-अभिमानी बनने में बड़ी मेहनत है। बाप तो बच्चों को क्लीयर कर समझाते हैं। पिछाड़ी तक पुरुषार्थ करते रहना है। कई2 कह देते हैं हम तो बाबा को ही याद करते हैं। परन्तु वह यथार्थ रीति समझते नहीं हैं। इसमें बड़ी मेहनत है। मेहनत बिगर फल थोड़ेही मिल सकता है। बाबा देखते हैं जो चार्ट बनाकर भेज देते हैं। महारथियों से तो चार्ट लिखना पहुंचता ही नहीं है। ज्ञान का अहंकार है। बाकी याद में बैठे वह मेहनत पहुंचती नहीं महारथीयों से। बाप समझाते हैं मूल बात है याद की। अपने पर नजर रखनी है हमारा चार्ट कैसे रहता है। वह नोट करना, चार्ट रखना महारथियों से पहुंचता नहीं है। कहेंगे फुर्सत नहीं। अगर याद की यात्रा में फुर्सत नहीं तो फिर ज्ञान की यात्रा कैसे होगी। मूल बात तो बाप कहते हैं अपने को आत्मा समझ अलफ को याद करो। यहां जितना समय बैठते हो तो सच्च2 अपने दिल से पूछो हम कितना समय याद में बैठे। यहां जब बैठते हो तो तुमको याद में ही रहना है। और चक्र फिराओ तो भी हर्जा नहीं है। हमको बाबा के पास तो जरूर जाना है। पवित्र सतोप्रधान होकर जाना है। इस बात को अच्छी रीत समझना है। कई तो फट से भूल जाते हैं। सच्चा2 चार्ट अपना बताते नहीं हैं। ऐसे बहुत महारथी है सच्च तो कब नहीं बतावेंगे। आधा कल्प झूठी दुनिया चली है तो झूठ जैसे अन्दर में जम गया है। इसमें भी जो साधारण है वह तो झट चार्ट लिखेंगे। महारथी तो कब लिखेंगे नहीं। उन्हों को अपना ज्ञान का ही अहंकार रहता है। बाप कहते हैं तुम पापों को भस्म कर पावन होंगे याद की यात्रा से। सिर्फ ज्ञान से तुम पावन नहीं होंगे बाकी फायदा क्या। पुकारते भी हो पावन बनने लिये। इसके लिये चाहिए याद। हरेक की सच्चाई से अपना चार्ट बनाना चाहिए। यहां तुम $\frac{3}{4}$ घंटा बैठते हो। तो देखना है $\frac{3}{4}$ घंटे में हम कितना समय अपने को आत्मा समझ बाप को याद करते थे। कईयों को तो सच्च बताने में लज्जा आती है। बाप को सच्च नहीं सुनाते हैं। वह समाचार देंगे यह यह सर्विस की, इतने को समझाया यह किया। परन्तु याद की यात्रा का चार्ट नहीं लिखते। बाप कहते हैं याद की यात्रा में नहीं रहने कारण ही तुम्हारा कोई को तीर नहीं लगता है। ज्ञान तलवार में जौहर नहीं भरता। ज्ञान तो सुनाते हैं, बाकी योग का तीर लग जाये। यह जरा मुश्किल है। बाबा तो कहते हैं $\frac{3}{4}$ घंटे में 5मिनट भी याद की यात्रा में नहीं बैठते होंगे। समझते ही नहीं है कैसे अपने को आत्मा समझ और बाप को याद करें। कई तो कहते हैं हम निरन्तर याद में रहते हैं। बाबा कहते हैं यह अवस्था अभी हो नहीं सकती।——

अगर निरन्तर याद करते हो तो कर्मातीत अवस्था आ जाये। ज्ञान की प्रकाष्ठा आ जाये। मेहनत है ना। विश्व का मालिक कोई ऐसे थोड़ेही बन जावेंगे। माया तुम्हारी बुधि का योग झट कहां न कहां ले जावेंगी। मित्र-सम्बन्धी आदि याद आते रहेंगे। किसको विलायत जाना होगा तो वह मित्र सम्बन्धी, स्टीमर आदि ही याद रहेंगे। विलायत जाने की जो प्रेक्टीकल इच्छा है वह खींचती है। बुधि योग बिल्कुल ही टूट जाता है। और कोई तरफ बुधि न जाय इसमें बड़ी मेहनत की बात है। सिर्फ एक बाप की ही याद रहे। यह देह याद भी न आये। यह अवस्था तुम्हारी पिछाड़ी की होगी। दिन प्रति दिन जितना याद की यात्रा को बढ़ाते रहेंगे उसमें तुम्हारा भी कल्याण है। जितना याद में रहेंगे उतना ही तुम्हारी कमाई होगी। अगर शरीर छोटा हो गया फिर तो यह कमाई कर न सकेंगे। जाकर छोटा बच्चा बनेंगे तो कमाई क्या करेंगे। भल आत्मा यह संस्कार ले जावेगी परन्तु टीचर तो चाहिए ना। जो फिर स्मृति दिलावे। बाप भी स्मृति दिलाते हैं ना बाप को याद करो। यह सिवाय तुम्हारे और कोई को पता नहीं है कि बाप की याद से ही हम पावन बनेंगे। वह तो गंगा स्नान को ही उंच मानते हैं। इसलिये गंगा स्नान ही करते रहते हैं। बाबा तो इन सभी बातों से अनुभवी है ना। इसने तो बहुत गुरु किये हैं। वह स्नान करने जाते हैं पानी का। यहां तुम्हारा स्नान होता है याद की यात्रा से। सिवाय बाप की याद तुम्हारी आत्मा पावन बन ही नहीं सकती। इनका नाम ही है योग। अर्थात याद की यात्रा। ज्ञान को स्नान नहीं समझना। योग का स्नान है। ज्ञान तो पढ़ाई है। योग का स्नान है जिससे पाप कटते हैं। ज्ञान और योग दो चीज़ें हैं। याद से ही जन्म-जन्मान्तर के पाप भस्म होते है। बहुत बच्चों को यह भी पता नहीं है ज्ञान और योग किसको कहा जाता है। दोनो अलग2 चीज़ है। बाप कहते हैं इस याद की यात्रा से ही तुम पावन बन सतोप्रधान बन जावेंगे। बाप तो बहुत अच्छी रीत समझाते हैं। मीठे2 बच्चों इन बातों को अच्छी रीत समझो। यह भी भूलो नहीं। याद की यात्रा से ही जन्म-जन्मान्तर के पाप कटेंगे। बाकी ज्ञान तो है पढ़ाई कमाई। दोनो अलग चीज है। ज्ञान और विज्ञान। ज्ञान माना पढ़ाई। विज्ञान माना योग। अथवा याद। किसको उंच रखेंगे? ज्ञान या योग? याद की यात्रा बहुत बड़ी है। इसमें ही मेहनत है स्वर्ग में तो तुम सभी जावेंगे। सतयुग त्रेता स्वर्ग और सेमी स्वर्ग। वहां तो इस पढ़ाई अनुसार जाकर विराजमान होंगे। बाकी मुख्य है योग की बात। प्रदर्शनी अथवा म्युजियम आदि में भी तुम ज्ञान समझाते हो। योग थोड़ेही समझा सकेंगे। सिर्फ इतना कहेंगे अपन को आत्मा समझ बाप को याद करो। बाकी ज्ञान तो बहुत देते हो। बाप कहते हैं पहले2 बात ही यह समझाओ कि अपन को आत्मा समझ परमात्मा बाप को याद करो। यह ज्ञान देने लिये ही तुम यह चित्र आदि बनाते हो। योग के लिये कोई चित्र आदि की दरकार नहीं है। चित्र सभी ज्ञान समझाने लिये बनाये जाते हैं। अपन को आत्मा समझने से ही देह का अहंकार बिल्कुल टूट जाता है। ज्ञान में तो जरूर मुख चाहिए वर्णन करने लिये। योग की तो एक ही बात है अपन को आत्मा समझ बाप को याद करना है। पढ़ाई में तो देह की दरकार है। शरीर बिगर कैसे पढ़ावेंगे वा पढ़ेंगे। पतित-पावन बाप है तो उनके साथ योग लगाना पड़े। परन्तु यह कोई जानते ही नहीं। बाप खुद आकर सिखलाते हैं। मनुष्य मनुष्य को कब सिखला न सके। बाप ही कहते हैं मुझे याद करो। इनको कहा ही जाता है परमात्मा का ज्ञान। परमात्मा ही ज्ञान का सागर है। यह बड़ी समझने की बातें हैं। सभी को यही समझाओ कि बेहद के बाप को याद करो। वह बाप नई दुनिया स्थापन करते हैं। रावण क्या चीज है यह कोई भी नहीं जानते। बाप तो स्वर्ग की स्थापना करते हैं, यह किसको भी पता नहीं है फिर नर्क की स्थापना कौन करते हैं। पुरानी दुनिया बदलती है तो जरूर नई दुनिया बनेगी। वह तो समझते हैं 50हजार वर्ष अजन पड़े हैं। तो सतयुग में जाने की बात करें क ही क्यों। वह समझते ही नहीं हैं कि नई दुनिया स्थापन होनी है। जो भगवान को याद करे। ध्यान में भी नहीं हैं। तो क ख्याल करे ही क्यों। भगवान को याद करें ही क्यों। यह भी तुम जानते हो परमपिता परमात्मा शिव भगवान एक ही हैं। हमेशा कहते हैं

ब्रह्मा देवतायनमः विष्णु देवतायनमः फिर पिछाड़ी में कहते हैं शिव परमात्मायनमः। वह ऊंच ते ऊंच है ना। परन्तु वह क्या है यह भी नहीं समझते हैं। अगर भितर ठिकर में है तो फिर नमः काहे की। कुछ भी नहीं समझते। अर्थ रहित बोलते रहते हैं। यहां तो तुमको आवाज से परे जाना है। अर्थात निर्वाणधाम शान्तिधाम जाना है। शान्तिधाम सुखधाम कहा जाता है। वह है स्वर्ग धाम। नर्क को धाम नहीं कहेंगे। अक्षर बड़े ही सहज है। क्राईस्ट का धर्म कहां तक चलेगा यह भी उन लोगों को कुछ भी पता नहीं है। कहते भी हैं क्राईस्ट से 3000 वर्ष पहले पैराडाईज था। अर्थात देवी देवताओं का राज्य था तो फिर 2000 वर्ष क्रिश्चनहुआ। फिर देवता धर्म होना चाहिए ना। मनुष्यों को बुधि कुछ भी काम नहीं करती। कहते भी हैं 3000 वर्ष पहले पैराडाईज था तो बाकी हुए 2000 वर्ष। कितना क्लीयर है। ड्रामा के राज को न जानने कारण कितने प्लान्स आदि बनाते रहते हैं। यह बातें बड़ी अवस्था वाली बूढ़ी बूढ़ा2 माताएं तो समझ न सकें। बाप समझाते हैं अभी तुम सभी की वानप्रस्त अवस्था है। वाणी से परे जाना है। वह भल कहते हैं निर्वाणधाम गया। परन्तु जाता कोई नहीं है। पुनर्जन्म फिर भी लेते जरूर हैं। वापस कोई भी जाता नहीं। वानप्रस्त में जाने लिये गुरु का संग करते हैं। बहुत वानप्रस्ती आश्रम है। माताएं भी बहुत हैं। वहां भी तुम बहुत सर्विस कर सकते हो। वानप्रस्त का अर्थ क्या है। बाप बैठ समझाते हैं। अभी तुम सभी वानप्रस्ती हो। सारी दुनिया वानप्रस्ती है। जो भी मनुष्य मात्र देखते हो इन आंखों सभी वानप्रस्ती हैं। सर्व का सदगति दाता एक ही सद्गुरु हैं। सभी को जाना ही है। जो अच्छी रीत पुरुषार्थ करते हैं वह अपना ऊंच पद पाते हैं। इनको कहा ही जाता है क्यामत का समय। क्यामत के अर्थ को भी वह लोग समझते नहीं हैं। तुम बच्चों में भी नम्बरवार समझते हैं। बड़ी ऊंची मंजिल है। सभी को समझाना है अभी सभी को घर जाना है जरूर। आत्माओं को वाणी से परे जाना है। फिर पार्ट रिपीट करेंगे आने लिये। परन्तु बाप को याद करते2 जावेंगे तो ऊंच पद पावेंगे। देवीगुण भी धारण करनी है। कोई भी गंदा काम चोरी चकारी आदि नहीं करनी चाहिए। तुम पूज्य वर्ण ही योग से। ज्ञान से नहीं। आत्मा पवित्र चाहिए। शान्तिधाम में तो पवित्र ही जा सकते हैं। सभी आत्माएं वहां रहती हैं। अभी सभी आते रहते हैं। आठ वर्ष के अन्दर बाकी जो भी होंगे वह यहां आते रहेंगे। तो तुम बच्चों को याद की यात्रा में बहुत रहना है। यहां तुमको मदद अच्छी मिलेगी। एक दो का बल मिलता है ना। तुम थोड़े बच्चों की ही ताकत काम करती है। गोवर्धन पर्वत दिखाते हैं अंगुली पर उठाया। तुम गोप-गोपियां हो ना। सतयुगी देवी देवताओं को गोप-गोपियां नहीं कहा जाता है। अंगुली तुम देते हो आयरनएजेड को गोल्डेनएजेड, नर्कवासी को स्वर्ग वासी बनाने। तुम एक बाप के साथ बुधि का योग लगाते हो। योग से ही पवित्र बनना है। इन बातों को भूलना नहीं है। यह ताकत तुमको यहां मिलती है। बाहर में तो असुरी मनुष्यों का संग रहता है। वहां याद में रहना बड़ा मुश्किल है। इतना अडोल वहां तुम रह न सकेंगे। संगठन चाहिए। यहां सभी एकरस इकट्ठे बैठते हैं तो मदद मिलेगी। यहां धंधा आदि कुछ भी याद नहीं रहता। बुधि कहां जावेगी। बाहर में धंधा-आदि घरबार खेंचेगा जरूर। यहां तो कुछ है नहीं। यहां का वायुमंडल अच्छा शुध रहता है। ड्रामा अनुसार कितना दूर पहाड़ी पर तुम आकर बैठे हो। यादगार भी सामने खड़ा है। इसलिये बाबा कोशिश करते रहे हैं आबू में बड़ा म्युजियम बन जाये। यादगार भी स्वयुरेट खड़ा है। ऊपर में स्वर्ग दिखाया है। नहीं तो कहां बनावे। तो बाबा कहते हैं यहां आकर बैठते हो तो अपनी 84 जांच करो हम बाप की याद में बैठे हैं। स्वदर्शनचक्र भी फिरता रहे। अभी 84 का चक्र पूरा हुआ अभी वापस घर जाना है। बीज को देखने से जरूर सारा झाड़ सामने आ जावेगा। यह फिर है चैतन्य मनुष्य सृष्टि रूपी झाड़। इन में कितनी वैराईटी है मनुष्यों की।

अच्छा मीठे2 सिकीलधे रूहानी बच्चों को रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुडमार्निंग। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते।

*:-अपनी अवस्था की जांच अपने दिल, दर्पण में सदैव करते रहने को ही पुरुषार्थी कहते हैं।,: